Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

'साहित्यिक वधाएँ और अनुवाद'

श्रीमती माधुरी परशुराम कांबळे
श्रीमती सी.बी.शाह महिला महा वद्यालय सांगली.

वश्व के ज्ञान भंडार सेज्ञान प्राप्त करने के लए व्यक्ति के पास समय सी मत है . साहित्य, समाज, राजनीति, संस्कृति, प्रकृति, शास्त्र, अनुसंधान, की जानकारीसंसार की समस्त भाषा देती है. इसी वजह सेभाषा का मनुष्य के जीवन में अ नन्य साधारण महत्व है. जीवन के हर मोड़ पर भाषासंप्रेषण का साधन बनकरमनुष्य के काम आती है.समाज के साथ-साथसंसार की समस्त भाषाओं में भी भन्नता पाई जाती है. और इसी भाषा भन्नता के कारणअनुवाद प्र क्रया कोबढ़ावा मल रहा है . मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता भाषा है. इसी कारणप्राचीन काल से ही अनुवाद का महत्व बढ़ता जा रहा है. संसार कीसमस्त भाषाओंका ज्ञानअन्य भाषाओं में अनुवाद के कारण ही प्रवाहित होता नजर आता है . साहित्य कीअनमोल संपदा कोअन्य भाषा भा षयों तक पहुंचाने का कार्य अनुवाद के माध्यम से ही कया जाता है.इसके माध्यम सेदेश ही नहीं वदेशी भाषाओं के ज्ञान की रा शहा सल करने का कार्यकरकेअनुवादराष्ट्र को संपन्न बनता है. डॉक्टर अंबादास देशमुख कहते हैं"अनुवाद मानव की मूलभूत एकता का,व्यक्ति चेतना एवं वश्व चेतना केअद्वैत का प्रत्यक्ष प्रमाण है वश्व संस्कृति के निर्माण की प्र क्रया में वचारों के आदान-प्रदान काबड़ा हाथ रहा है. और यह आदान-प्रदानअनुवाद के माध्यम से ही संभव हो सका है."[1]

अनुवाद की संकल्पना को आधुनिक काल में अत्य धक महत्व मल रहा है . साहित्य की अन्य वधाओं की तरह अनुवाद को भीएक रचनात्मक वधा माना जा रहा है. अनुवाद का सामान्य अर्थ है, एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में ले जाना . क्यों क अनुवादमूल साहित्य सामग्री में ने निहित भाव , आशय, वषय, भाषा सौंदर्य, और शैलीको सुर क्षत रखते हुएदूसरी भाषा में रूपांतरित करता है . जिससे अनुवाद अत्यंत स्तरीय बन जाता है . क्यों क दूसरी भाषा कोअच्छा अवसरप्राप्त होता है . इससे स्पष्ट होता है क अनुवाद में सबसे महत्वपूर्ण इसका भावार्थ होता है.

जितना सरल और सामान्य अनुवाद प्रतीत होता है, उतना ही यह कार्य जटिल है. क्यों कएक भाषा की सामग्री काभाव, शैली, सौदर्य, दूसरी भाषा मेंपरिवर्तित करना कोई साधारण कार्य नहीं है . अनुवाद के भेद और प्रकरो के अनुसार ही उसके स्वरूप और प्र क्रया में अंतर कया जाता है. अनुवाद प्र क्रया मेंपाठ पठन पाठ वश्लेषणसमायोजन मूल से तुलनाआदि बिंदुओं से गुजरना होता है . साथ हीअनुवाद के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्ष की ओर भी ध्यान देना आवश्यक होता है. प्रो. दिलीप संह कहते हैं"अनुवाद का संबंध स्रोत भाषा के संदेश का लक्ष्य भाषा में निकटतम, स्वाभा वक तथा तुल्यार्थक उपादान प्रस्तुत करणे से होता है. "[2]साहित्यिक वधा कोकाव्य , नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध जैसी अनेक वधाओं में वभाजित कया गया है . इन वधाओं में र चत अनेक रचनाओं काअनुवाद हुआ हैउनके प्रकारहै-

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

काव्य अनुवाद:

एक भाषा में र चत काव्य कादूसरी भाषा में अनुवाद करना काव्य अनुवाद कहलाता है . यह अनुवादगद्य पद्यदोनों में मुक्त छंद में हो सकता है . पद्य तथामुक्त छंद के अ धकांश काव्य रचनाओं का अनुवादमुक्त छंद में हुआ है . गद्यांश की तुलना में काव्य अनुवादकठिन माना गया है . फर भी काव्य कृतियों केअनुवादहर भाषा में प्राप्त होते हैं . काव्य सृजन एक साधन है, ऐसे माना जाता है. और इसी साधना से नि र्मत काव्य के भाव वचार एवं कल्पना शक्तिअनुवाद में उपस्थित होनाअसंभव कार्य होता है. कई वद्वान काव्य को अंतरानुभूति मानते हैं . ऐसी अवस्था मेंक व की आंतरिक संवेदनाओं का रूपांतरणयथार्थ होना कठिन कार्य है. शैली और अर्थ दोनों दृष्टियों को ध्यान में रखकर अनुवाद करनाभी कठिन कार्य होता है. क्यों क काव्य अनुवाद को वद्वान टीका, रूपांतरण, व्याख्याआदि रूपों में भी देखते हैं.काव्य की मूल कलाकृति केरचनाकार के मनोभावों कोपुनः स्था पत करनाअनुवादक के लए कठिन कार्य बन जाता है. इस लए काव्य अनुवाद कठिनहै ऐसा माना जाता है. काव्य में भाषा और भावों कीसुंदर एवं मा र्मक अ भव्यक्ति होती है . परिणाम स्वरुप काव्य अनुवाद में शब्द अनुवाद करना उ चत नहीं रहता , बल्कि भावानुवाद करना आवश्यक बन जाता है . क वता में कल्पना, रस योजना, छंद योजना, अलंकार, माधुर्य, गीत का परिप्रेक्ष होता है. ऐसी स्थिति में अनुवाद में इन सभी तत्वों का ध्यान नहीं रखा गयातो अनुवाद सार्थक नहीं होता . हिंदी की अनेक रचनाओं के अनुवाद हुए हैं. डॉ .अम्बादास देशमुख कहते हैं"असंभव को संभव बनानामानव की एक सदैव कामनाऔर अदम्य इच्छा ही नहीं रही अ पतु इस दिशा मेंउसने बहुत कुछ कर भी दिखाया है.काव्य अनुवाद के क्षेत्र में भीमानव पीछे नहीं रहा.वेद ,उपनिषद ,बाइबल,कुरान,औरश्रीमद्भागवद के अनेक भाषाओं मेंगद्यांनुवाद के साथ-साथ पद्यानुवाद भी उपलब्ध है."[3] (पृष्ठ५०३)

मुक्त छंद अनुवाद:

काव्या सर्जन के कुछ नियम होते हैं . उसी के अनुसार इसका निर्माण होता है . सुर. ताल गति,छंद,अलंकारों से युक्त कृति सही अर्थ में काव्य का प्रतिनि धत्व करती है . ऐसी प्राचीन काल से मान्यता है. इस प्रकार अनुवाद की प्र क्रया में भी कुछ नियम का निर्वाह करना पड़ता है . कभी-कभी अनुवादक छंद के अनुशासन को स्वीकार करते हुए मुक्त छंद में अनुवाद करता है . इसे मुक्त छंद अनुवाद कहते हैं. इस अनुवाद में तुक, मात्रा,छंद के नियमों का ध्यान नहीं रखा जातामूल रचना मूल छंद में होने पर भी मुक्त छंद अनुवाद कया जाता है. ले कन आज मूल रचना छं दोबद्ध है या नहीं इसका वचार कए बिनाअनुवाद कया जाता है.

नाट्य अनुवाद:

दृश्य काव्य और रंगमंच की एक प्र सद्ध व धा के रूप में नाटक को पहचाना जाता है . जिसमेंअ भनय और रस को वशेष महत्व दिया जाता है. नृत्य, वाद्य, गीतइन बातों का नाटक में वशेष कार्य होता है. अन्य अनुवादों मेंशब्द तथा वाक्य की दृष्टि सेअनुवाद की प्र क्रया पूर्ण करने काप्रयास रहता है. परंतु नाट्यअनुवाद में मंचीय स्थिति अ भनयरस योजनातथा प्रभाव कायथार्थ परक वचार कया जाता

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

है. इस लए नाट्य अनुवाद भी सरल कार्य नहीं है . कसी नाटक कृतिकानाटक के रूप मेंअनुवाद करनानाट्य अनुवाद माना जाता है.नाटक कोनाटक अन्य वधाओं से अलग रखने का कार्यउसकी मंचीयता और दृश्यता करती है. कसी भी नाटक का अनुवादतभी सफल माना जाता है जब वह मूल् की भांतिअ भनय हो. और उसके दृश्य व वध आयाममेंरूपांतरित कया जा सके. रंगमंच की व्यावहारिकता का ध्यान रखते हुएजो नाट्य अनुवाद कए जाते हैं वही सफल होते हैं . नहीं तो वे केवल पठा नुवाद ही कहलाते हैं. आचार्य रामचंद्र शुक्ल कहते हैं "द् वतीय उत्थान केअंतिम भाग मेंपं डत रूप नारायणपांडे ने गरीश बाबू के ' पतिव्रता' क्षीरोद्प्रसाद ' वद्या वनोद के ' खानजहाँ' र वंद्र'बाबू केअचलायतनतथा द्वीजेंद्रलाल राय के उसपार ,शाहजहां , दुर्गादास, ताराबाईआदि कई नाटकों के अनुवाद प्रस्तुत कए.अनुवादकों की भाषाअच्छी खासी हिंदी हैऔर मूल के भावों कोठीक-ठाक व्यक्त करती है.इन नाटकों के संबंध मेंयह समझ रखना चाहिए क बंगवा सयो की आवेशशील प्रकृति काआ रोप उनके पात्रों में पाया जाता है. जिससेबहुत से इतिहास प्र सद्ध व्यक्तियों के क्षोभपूर्ण लंबे भाषणउनके अनुरूपनहीं जान पड़तेप्राचीनऐतिहा सक वृत्तलेकर लखे हुए नाटकों मेंउस काल की संस्कृतिऔरपरिस्थिति कासम्यक अध्ययननहीं प्रकट होता"[4]

कथा साहित्य का अनुवाद :

उपन्यास तथा कहानीसाहित्य की प्राचीन वधायक है . अ धकांश भारतीय भाषाओं की कहानियां तथा उपन्यास लोक प्रय रहे हैं . बांग्ला, मराठी, गुजराती, त मलभाषा के कथा साहित्य काप्रचुरता से अनुवाद हुआ है. कहानी ऐसी वधा हैजोछोटे बच्चों से लेकर बड़ों तक उत्सुकता का वषय रही है. इस लए कथा साहित्य के अनुवाद मेंअनुवादकों का प्रयास अ धक रहा है.कथा साहित्य में सामाजिक जीवन का प्रतिबिंब झलकता हैइस लए समाज जीवन का यथार्थ परिचय पाने हेतुअनुवादक को व र्णत वषय केजीवन मूल्यपरिवेशसांस्कृतिक महत्वका सूक्ष्म ज्ञान होना आवश्यक है. डॉ अंबादास देशमुख लखते हैं "दोनों भाषाओं की प्रकृति और व र्णत वषय के परिप्रेक्ष्य से जानकारी रखने वालासही अनुवादप्रस्तुत करके वषय के साथ न्यायतथा पाठकों की संतुष्टि कर सकता है.आज वश्व की सभी भाषाओं केउत्कृष्ट उपन्यासोंतथा कहानियों केदूसरी भाषाओं मेंसफल अनुवाद मलते हैं.यही प्रवृत्तिआज अ धक लोक प्रय होती जा रही है."[5]कथा साहित्य के अनुवाद मेंअनुवादक कोकृति की मूलनिष्ठा के साथईमानदारी रखना आवश्यक होता है.

निबंध अनुवाद :

नाटक और कहानी साहित्य में गद्य केवल एक माध्यम के रूप में होता है . ले कन निबंध में उसका स्वतंत्र अस्तित्व और परिचय दिखाई देता है. निबंध को गद्य की कसौटी माना गया है. परिणाम स्वरुप इसका अनुवाद भी जठील कार्य माना जाता है . निबंध में प्रयुक्त भाषा का सौंदर्य अनुवाद में सुर क्षत रखना आसान कार्य नहीं है . वचारों की कलात्मक अ भव्यक्ति उसका आशयएवं उसके संप्रेषण की स्थिति मूल रचना में जिस रूप में व्यक्त हुई है अनुवाद में भी उतनी ही सूक्ष्मता का ध्यान रखना पड़ता है.

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886| UGC CARE II
Vol. 19 Issue 04, April- 2024
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अन्य गद्य वधाओं का अनुवाद:

उपन्यास, कहानी को छोड़कर अन्य जो गद्य वधाएं हैं जैसे आत्मकथा , संस्मरण, रेखा चत्र, रिपोर्ताज, डायरी, आलोचनाआदि साहित्य का भीअनुवाद प्रचुरता में मलता है. इनमें आत्मकथा तथा यात्रा साहित्य का अनुवाद तो अत्यंतलोक प्रय हुआ है. यह सारी वधाएं एक दूसरे से भन्न होने के कारणइसको कसी नियम में बिठाकर अनुवाद करना संभव नहीं है.रचनाकार के व्यक्तिगत अ भरु च से संबं धत यह वधाए होने के कारण इस पर व्य यक्तिकता का गहरा प्रभाव रहता है . इसी प्रभाव के परिणाम स्वरूपइनकी एक शैली बन गई है. अनुवादक के लएयह कठीण कार्य होता है क कसी लेखक की शैली कोउसकी ही शैली में लाना. रचनाकारमहान व्यक्तियों के जीवनियों के संदर्भ काअनुशीलन करता हैऔर अंतिम तथ्य व्यक्त करता है.अनुवाद में यह कार्य सूक्ष्मता से नहीं हो पताइस लए कभी-कभी ऐसी कृतियां केवल भाषा का परिवर्तन ही होता है . भावनाओं तथा वचारों कानहीं.हिंदी में तथा अन्य भाषाओं में उपयुक्त सभी वधाओं में र चत साहित्य का बड़ी मात्रा में अनुवाद हुआ है.

आधुनिक काल में साहित्य की अन्य वधाओं की तरह अनुवाद को भी एक रचनात्मक व धा माना जाने लगा है . ज्ञान वज्ञान के क्षेत्र में जो मौ लक कार्य हो रहा है उसे प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण साधनके रूप में अनुवाद की अनिवार्यता सद्ध हो चुकी है . अनुवाद का व्यवस्थित और व्यापक स्वरूप वर्तमान युग में सामने आया है.भारत कीसभी भाषाओं के साहित्य एक दूसरे में अनुवाद के माध्यम से परिवर्तित हुए दिखाई देते हैं. प्राचीन धर्म ग्रंथो से लेकर आधुनिक युग के अनेक साहित्य और साहित्येतर ग्रंथो का अनुवाद अ धकांश रूप में दिखाई देता है . वर्तमान युग मेंअनुवाद के माध्यम से वश्व की अनेक भाषाओं का ज्ञान अनूदित होकर हमारे सामने खड़ा है.

संदर्भ:

1.अम्बादास देशमुख, प्रयोजनमूलक हिंदी:अधुनातन आयाम ,शैलजा प्रकाशन कानपूर-11द् वतीय संस्करण 2006, पृष्ठ**470.**
2. प्रो.दिलीप संह,अनुवाद की व्यापक संकल्पना,वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 144
3.अम्बादास देशमुख, प्रयोजनमूलक हिंदी:अधुनातन आयाम ,शैलजा प्रकाशन कानपूर-11द् वतीय संस्करण 2006,पृष्ठ 503
4. आचार्य रामचंद्रशुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास , अशोक प्रकाशन,दिल्ली-6,नवीन संस्करण 2006,पृष्ठ**293**
5.अम्बादास देशमुख, प्रयोजनमूलक हिंदी:अधुनातन आयाम ,शैलजा प्रकाशन कानपूर-11द् वतीय संस्करण 2006,पृष्ठ 504